CHAPTER 21

HINDI

Doctoral Theses

212. अनिल कुमार

दलित चिंतन के संदर्भ में भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य

निर्देशिका : डॉ. शकुन्तला कालरा

Th 18847

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में दलित चिंतन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इसके स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। आधुनिक भारतीय चिंतन में गांधीवाद, मार्क्सवाद, लोहियावाद और अम्बेडकरवाद के द्वारा दलित चिंतन के विकास को स्पष्ट करते हुए दलित चिंतन को सामाजिक परिवर्तन एवं मानव-मूल्यों की तलाश के चिंतन के रूप में व्याख्यायित किया गया है। 'निर्गुण' व 'संत' शब्दों का आशय स्पष्ट करते हुए किस तरह से निर्गुण संतमत ने भारतीय समाज के वर्ण, जाति, कुल और धर्म की श्रेष्ठता के विरुद्ध दलित वर्ग में जागृति पैदा की है इस पर प्रकाश डाला गया है। दलित चिंतन के ऐतिहासिक विकास को बौद्ध दर्शन, सिद्ध-नाथ और निर्गुण संत साहित्य के रूप में रेखांकित किया गया है। इन्हीं संतों से प्रेरणा लेकर आधुनिक काल में अनेक समाज-सुधार आंदोलनों की शुरूआत हुई जिनका मुख्य ध्येय समाज में स्त्री और दलित वर्ग की दशा में सुधार करना था । इस दृष्टि से राजा राममोहन राय और उनकी आत्मीय सभा व ब्रह्म समाज, स्वामी दंयानंद सरस्वती और उनका आर्य समाज, रानाडे का प्रार्थना समाज, ज्योतिबा फूले और उनका सत्यशोधक समाज मुख्य है। ऐसे ही दक्षिण भारत में छुआछूत विरोधी आंदोलन, श्रीनारायण गुरु का 'श्री नारायण धर्म' रामास्वामी नायकर 'पेरियार' का 'सेल्फ रेस्पेक्ट मूवमेंट', स्वामी विवेकानंद का 'रामकृष्ण मिशन' महात्मा गांधी और उनका 'सर्वोदय समाज' का सपना, डॉ. अम्बेडकर और उनका दलित संघर्ष आदि मुख्य है। दलित चिंतन के संदर्भ में भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक

और सांस्कृतिक पक्ष या धन के महत्त्व के विषय में बताया गया है। दलित चिंतन के संदर्भ में भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य के धार्मिक स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। दलित चिंतन और भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य में नारी की दीन-हीन स्थिति के बारे में बताया गया है कि किस तरह भक्तिकाल तक आते-आते स्त्री घर की चारदीवारी और समाज की रूढ़ियों के नागपाश में फंस कर रह गई थी । दलित चिंतन की दृष्टि समाज और जनमानस में पाये जाने वाले भाषा के वैविध्य और मान्यताओं को रेखांकित किया गया है।

विषय सूची

1. दलित चिंतन की अवधारणा, वैशिष्ट्य एवं उसका विकास 2. भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य का स्वरूप 3. दलित चिंतन की पृष्ठभूमि 4. दलित चिंतन के संदर्भ में भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पक्ष 5. दलित चिंतन के संदर्भ में भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य के धार्मिक स्वरूप का विश्लेषण 6. दलित चिंतन और भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य में स्त्री 7. दलित चिंतन के परिप्रेक्ष्य में भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य का भाषा 8. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

213. अनुशब्द

हिंदी समाचार-पत्रों में प्रकाशित कार्टूनों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. मोहन

Th 18872

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध अखबारी कार्टूनों की सामाजिक-राजनैतिक प्रतिबद्धता एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उसकी प्रासंगिकता का बयान करता है। उसके संक्षिप्त आयतन में मौजूद विराट भावों को रेखांकित करता है। इसमें भाषिक एवं सामाजिक संरचना की अंतराश्रयता को दर्शाते हुए समाज भाषाविज्ञान के इतिहास एवं उसकी महत्त्वपूर्ण संकल्पनाओं पर बात की गयी है। तथा भाषाविज्ञान एवं समाजभाषाविज्ञान के पार्थक्य को रेखांकित किया गया है। इसके अंतर्गत चिन्हशास्त्र की अवधारणा पर विचार करते हुए उसके प्रमुख प्रकारों-सम्प्रेषण-क्रम, दृश्य चिन्हशास्त्र, स्थान चिन्हशास्त्र एवं भू-चिन्हशास्त्र पर विस्तार से विचार किया गया है। तथा कार्टून के विश्लेषण में

इनके योगदान पर सोदाहरण चर्चा की गयी है। इसमें कार्टून के परिचय एवं प्रकार पर बात करते हुए उसकी विकास-यात्रा, सामजिक सरोकार तथा प्रासंगिकता की पड़ताल की गयी है। भाषा के विभिन्न स्तरों पर कार्टून के भाषिक वैशिष्ट्य को रेखांकित किया गया है। तथा सम्पादकीय की भाषा से उसकी भिन्नता को दर्शाया गया है। सांस्कृतिक स्मृतियों एवं सामाजिक अनुभवों का उपयोग करते हुए भाषावैज्ञानिक, चिन्हशास्त्र एवं समाजभाषावैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर विभिन्न विषयों पर बने कार्टूनों का अध्ययन-विश्लेषण किया गया है। तथा उनमें निहित विभिन्न सामाजिक अर्थों का उद्‌घाटन किया गया है।

विषय सूची

1. समाजभाषाविज्ञान : अवधारणा एवं इतिहास 2. चिन्हशास्त्र : स्वरूप एवं प्रकार 3. कार्टून : स्वरूप, इतिहास एवं सरोकार 4. कार्टून की भाषिक संरचना : स्थापनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ 5. कार्टूनों का सामजभाषावैज्ञानिक अध्ययन। 6. समाहार। संदर्भिका ।

214. अभिमन्यु कुमार

भूमंडलीकृत भारत में हिंदुत्व की अवधारणा और दलित अस्मिता (संदर्भः हिंदी का दलित लेखन) ।

निर्देशक : प्रो. श्यौराज सिंह 'बेचैन'

Th 18851

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में भूमंडलीकरण, हिंदुत्व और अस्मिता विमर्श की एक साथ पड़ताल की गई हैं भारत में भूमंडलीकरण का स्वरूप क्या रहा है इसको लेकर चर्चा की गई है। इसमें दलित और भूमंडलीकरण को भी एक साथ देखने की कोशिश की गयी है। हिंदी के प्रमुख दलित उपन्यासों को हिंदुत्व, भूमंडलीकरण और अम्बेडकरवादी विचारों के संदर्भ में देखा है। दलित उपन्यासों में हिंदुत्व और भूमंडलीकरण को लेकर कई तरह के सवाल उभरे हैं। इन सवालों की जाँच परख दलित अस्मिता की दृष्टि से किया गया है। इसके अंतर्गत अस्मिता, भूमंडलीकरण और हिंदूवाद के रूप को देखा गया है। हिंदी दलित आत्मकथाओं की अपनी विशेषता रही है। दलित आत्मकथाओं ने अपने अनुभवों को इन आत्मकथाओं में उकेरा है। इन आत्मकथाओं

में रचनाकार भूमंडलीकरण और हिंदुत्व के सवालों से भी टकराता है। दलित आत्मकथाओं में अस्मिताबोध अपने मार्मिक रूप में प्रकट हुआ है, जिसके कई आयाम है। दलित कहानियों में वैश्वीकरण, हिंदूवाद और सामाजिक प्रतिरोध के स्वरूप को जानने की कोशिश की गयी है। वैश्वीकरण और हिंदूवाद के परिप्रेक्ष्य में दलित कविताओं का विश्लेषण किया गया है। इन कविताओं में दलित कवियों ने अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त किया है।

विषय सूची

1. भूमंडलीकरण, हिंदुत्व और अस्मिता विमर्श : एक पड़ताल 2. प्रमुख दलित उपन्यासों में हिंदुत्व, भूमंडलीकरण और अम्बेडकरवादी विचारों के संदर्भ 3. दलित आत्मकथाओं में अस्मिता, भूमंडलीकरण और हिन्दूवाद के संदर्भ 4. दलित कहानियों में वैश्वीकरण, हिंदूवाद और समाजिक प्रतिरोध का स्वरूप 5. वैश्वीकरण और हिंदूवाद के परिप्रेक्ष्य में दलित कविताओं का विश्लेषण 6. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

215. उदार (रविता)

हिन्दी के स्त्री नाट्य-लेखन में द्वंद्व और विद्रोह चेतना ।

निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

Th 18875

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अन्तर्गत हिन्दी नाट्य साहित्य का एक संक्षिप्त परिचय दिया गया है, जिसमें नाट्य साहित्य को स्वतंत्रता पूर्व नाट्य लेखन तथा स्वातंत्र्योत्तर नाट्य लेखन दो वर्गों में विभाजित कर प्रमुख नाटककारों एवं उनकी नाट्य कृतियों का उल्लेख संक्षिप्त रूप में किया गया है। इसके पश्चात् स्त्री नाट्य लेखन के उद्‌भव, विकास एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रमुख नाट्य लेखिकाओं की शोध प्रबन्ध की दृष्टि से महत्वपूर्ण रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसमें द्वंद्व को परिभाषित करते हुए विविध भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दिए गए द्वंद्व विषयक विचारों एवं मान्यताओं पर प्रकाश डालते हुए बाह्य एवं आंतरिक द्वंद्व की चर्चा की गई है। तत्पश्चात् द्वंद्व के कारण में मस्तिष्क में चलने वाली द्वंद्व विषयक विचार-प्रक्रिया को जानने समझने का प्रयास किया गया है। घटनात्मक पक्ष के

अन्तर्गत द्वंद्व किस प्रकार मानव के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व को प्रभावित करता है इसकी चर्चा की गई है। विवेच्य नाट्य कृतियों के नारी पात्र किस प्रकार विविध स्तरों पर द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में पड़कर अनेकानेक द्वंद्वों को झेलते हैं इसका विस्तार से विवेचन, विश्लेषण किया गया है। किस प्रकार विवेच्य नाटकों के नारी पात्र अपनी संघर्षमय स्थितियों, दोहरे उत्तरदायित्वों, वैवाहिक सम्बन्धों की सफलता-असफलता, अपने साथी पुरुष पात्रों की मानसिकता तथा स्वयं निर्णय न लेने की उहापोह में जहाँ वैचारिक धरातल पर द्वंद्वग्रस्त होती है वहीं यह द्वंद्वात्मक विचार प्रक्रिया उनके जीवन को प्रत्येक स्तर पर किस प्रकार द्वंद्व ग्रस्त करती चली जाती है इसका विस्तार से विवेचन किया गया है। विद्रोह चेतना के कोशगत अर्थों के साथ विविध विचारको के विद्रोह चेतना विषयक विचारों एवं मान्यताओं की चर्चा करते हुए विद्रोह चेतना के आधारभूत तत्वों का विश्लेषण किया गया है। नाट्यकृतियों के नारीपात्रों को विद्रोह की चिंगारी किस प्रकार दहका रही है इसका विश्लेषण किया गया है। विवेच्य नाटकों की नारी पात्र द्वंद्व को झेलती अंत में अपने स्वयं के अविचल निर्णय पर पहुंचती विद्रोह चेतना में सम्पृक्त हैं। वे किस प्रकार अपनी प्रतिकूल जीवन परिस्थितियों पर विजय पाती है, प्रगति का नया रास्ता खोजती है, जीवन को अवश्यम्भावी संघर्ष मान कर निरन्तर प्रयासरत है अथवा कभी-कभी किन्हीं परिस्थितियों से हार कर थक कर विश्राम की मुद्रा में है इन्हीं का सार रूप में विवेचन किया गया है।

विषय सूची

1. हिन्दी नाट्य लेखन परम्परा में स्त्री नाट्य लेखिकाओं की भूमिका 2. द्वंद्व-अभिप्राय, विचारात्मक एवं घटनात्मक पक्ष स्त्री नाट्य लेखन में द्वंद्व 4. विद्रोह चेतना : अभिप्राय एवं आधारभूत तत्त्व 5. स्त्री नाट्य लेखन में विद्रोह चेतना। 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

216. कश्यप (जयन्त कुमार)
फणीश्वरनाथ रेणु के कथा-साहित्य मे राजनैतिक द्वंद्व ।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह
Th 18863

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में साहित्य और राजनीति के बीच के रिश्ते की समीक्षा की गई है जिसके तहत साहित्य और विचारधारा के संबंध के सैद्धांतिक और व्यावहारिक स्वरूप का निरूपण किया गया है। इसी कड़ी में मार्क्सवादी, समाजवादी, गाँधीवादी और पूंजीवादी (कलावदी) विचारधारा का परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि द्वंद्व का स्वरूप अपने आप में जितना जटिल और संश्लिष्ट है, द्वंद्व को जानने की प्रक्रिया उससे कम जटिल और संश्लिष्ट नहीं। इसमें प्रेमचंद-पूर्व प्रेमचंद युगीन ओर प्रेमचंदोत्तर उपन्यास में निहित राजनैतिक द्वंद्व के विविध आयामों की पहचान कर उन्हें व्याख्यायित किया गया है। रेणु के उपन्यासों में राजनैतिक द्वंद्व के विविध आयाम-जातीय द्वंद्व, वर्गीय द्वंद्व, गांव-शहर का द्वंद्व और स्थानीय-सार्वभौम के द्वंद्व की पहचान और समीक्षा की गई है। राजनैतिक द्वंद्व के इन्हीं आयामों की पहचान और समीक्षा रेणु की कहानियों में भी की गई है।

विषय सूची

1. साहित्य और राजनीति के संबंध का स्वरूप 2. राजनैतिक द्वंद्व का स्वरूप और विविध आयाम 3. रेणु-पूर्व हिन्दी कथा-साहित्य में राजनैतिक द्वंद्व 4. रेणु के उपन्यासों में राजनैतिक द्वंद्व 5. रेणु की कहानियों में राजनैतिक द्वंद्व 6. उपसंहार। पुस्तक सूची।

217. कालरा (जितेन्द्र वीर)

बीसवीं शती के अंतिम दशक के उपन्यासों में व्यष्टि और समष्टि का द्वंद्व।

निर्देशिका : डॉ. विनय नंदा

Th 18873

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में व्यष्टि और समष्टि का सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत करते हुए व्यष्टि और समष्टि के पारस्परिक सम्बन्ध तथा अंतर्द्वंद्व का विश्लेषण किया गया है। व्यक्तिवाद, समष्टिवाद, समाजीकरण, व्यक्ति-स्वातंत्र्य और अस्तित्ववाद आदि अवधारणाओं के परिप्रेक्ष्य में व्यष्टि और समष्टि के स्वरूप व पारस्परिक संबंध एवं अंतर्द्वंद्व को समझने का प्रयास किया गया है। इसमें हिन्दी उपन्यास की लगभग सौ वर्षों की यात्रा के प्रारंभ से लेकर बीसवीं शती के नवें दशक तक विभिन्न विकास

क्रमों में अभिव्यक्त व्यष्टि-समष्टि के द्वंद्व को संश्लिष्ट रूप में लक्षित किया गया है। बीसवीं शती के अंतिम दशक के उपन्यासों में अभिव्यक्त विभिन्न सांस्कृतिक-सामाजिक संस्थाओं, रीति-रिवाज़ों, सामाजिक नैतिकता, विवाह- परिवार तथा कार्यालयी-प्रशासनिक समष्टि के साथ व्यष्टि के द्वंद्व का विश्लेषण किया गया है। धर्म भी एक समष्टिगत मूल्य है जो समाज में व्यक्तियों के आचरण का नियमन करता है। किन्तु अपने संकीर्ण रूप में धर्म साम्प्रदायिकता का रूप धारण कर लेता है, जो कि अंतिम दशक के उपन्यासकारों का एक मुख्य सरोकार रहा है । कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान', भीष्म साहनी का 'नीलू नीलिमा निलोफर' तथा ज्योतिष जोशी का 'सोनबरसा' इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भारतीय समाज में युगों से चली आती जाति व्यवस्था के प्रतिरोध स्वरूप जिस दलित विमर्श का प्रारंभ शताब्दी के अंतिम दौर में हुआ, उसे बल प्रदान करने में इस दशक के विभिन्न उपन्यास कारगर साबित होते हैं, जिनका विश्लेषण इस शोध प्रबंध में किया गया है।

विषय सूची

1. व्यष्टि और समष्टि : सैद्धांतिक अवधारणा व स्वरूप 2. हिन्दी उपन्यास यात्रा और उसमें अभिव्यक्त व्यष्टि और समष्टि का विविध स्तरीय द्वंद्व (नवें दशक तक) 3. बीसवीं शती के अंतिम दशक के उपन्यासों में अभिव्यक्त विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से व्यष्टि का द्वंद्व । 4. बीसवीं शती के अंतिम दशक के उपन्यासों में 'धर्म', 'साम्प्रदायिकता' तथा 'जातिगत समष्टि' से 'व्यष्टि' का द्वंद्व 5. बीसवीं शती के अंतिम दशक के उपन्यासों में 'पुरुष वर्चस्ववादी समष्टि' और 'व्यष्टि नारी' का द्वंद्व 6. उपसंहार। परिशिष्ट।

218. किम योङ् जङ्

सांस्कृतिक परिवर्तनशीलता के बिन्दु और स्वंतत्रतापूर्व हिन्दी नाटक।

निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

Th 18865

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक के हिन्दी नाटकों में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक परिचर्चाओं को स्वनिष्ठता और अन्यता; नूतनता और प्राचीनता के ढाँचे में व्याख्यायित किया गया है। जिसे मूलतः 19वीं सदी के

उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध के प्रसिद्ध नाटककार भरतेन्दु हरिश्चन्द्र और जयशंकर प्रसाद के हिन्दी नाटकों के माध्यम से गहन, गम्भीर और व्यापक रूप से समझने की कोशिश की गई है। इन दोनों ही नाटककारों के नाटक तदयुगीन सांस्कृतिक परिचर्चा में हो रहे परिवर्तनों का महान आख्यान है। हिन्दी नाटक सांस्कृतिक परिचर्चाओं का उत्पादन और उत्पादक बना रहा । दूसरे शब्दों में हिन्दी नाटक 19वी सदी के उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध की सांस्कृतिक परिचर्चाओं का स्थान बना रहा । इस प्रश्न पर भी प्रस्तुत शोध में विचार किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी नाटकों पर शोध करते हुए सांस्कृतिक परिवर्तनशीलता के बिन्दुओं की पड़ताल में दो प्रमुख नाटकरकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850-1885) और जयशंकर प्रसाद (1889-1937) के नाटकों का अध्ययन किया गया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और जयशंकर प्रसाद स्वतंत्रतापूर्व हिन्दी नाटकों के वे दो आधार स्तम्भ हैं जिनके विचार और शैली का अनुपालन ही उनके तदयुगीन नाटककारों में कमोवेश दिखाई देता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और जयशंकर प्रसाद दो साहित्यकार व्यक्ति नही अपितु अपने युग का प्रतिनिधित्व करने वाली साहित्यकार संस्थाएं हैं। यही कारण रहा कि इन दो प्रमुख नाटककारों के नाटकों के माध्यम से उस युग की सांस्कृतिक परिवर्तित होती नब्ज़ को समझने की कोशिश की है।

विषय सूची

1. संस्कृति की अवधारणा और सांस्कृतिक अध्ययन 2. 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध और 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में पश्चिमोत्तर भारत की सांस्कृतिक परिवर्तनशीलता 3. 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध की सांस्कृतिक परिचर्चाओं की परिवर्तनशीलता के बिन्दु और भारतेन्दु युग 4. 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध की सांस्कृतिक परिचर्चाओं की परिवर्तनशीलता के बिन्दु और प्रसाद युग 5. उपसंहार। संदर्भ-सूची।

219. खिल्लन (पूजा)

समांतर सिनेमा का भाषिक और सामाजिक अध्ययन : विशेष संदर्भ नसीरूद्दीन शाह अभिनीत फिल्में।

निर्देशक : डॉ. स्मिता मिश्र

Th 18869

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में समांतर सिनेमा की अवधारणा तथा पॉपुलर फिल्म (लोकप्रिय सिनेमा) के परिचय के साथ-साथ दोनों में अन्तर स्पष्ट किया गया है जिसमें एक तरफ सामंतर सिनेमा को सिनेमा संसार में वैचारिक आंदोलन की तरह देखा गया है तो दूसरी तरफ लोकप्रिय सिनेमा को व्यावसायिक सिनेमा के रूप में देखा है। इसमें पवन वर्मा की किताब 'मध्यवर्गीय की अजीब दास्तान' एवं समांतर फिल्मों में वर्णित मध्यवर्ग को आधार बनाकर उपलब्ध सामग्री का विश्लेषण किया गया है। नसीरुद्दीन शाह की फिल्मों के विभिन्न चरित्रों के अवदान एवं भूमिका पर प्रकाश डालते हुए उनका वर्गीकरण किया गया है तथा भाषा, वेशभूषा, पात्रगत व्यवहार आदि के आलोक में नसीर की फिल्मों के माध्यम से उन्हें देखा गया है। नसीर का जीवन परिचय और प्रशिक्षण, विभिन्न पत्रिकाओं एवं इंटरनेट पर उपलब्ध साक्षात्कार तथा उपलब्ध फिल्मों के आधार पर उनकी अभिनय प्रक्रिया तथा फिल्म माध्यम की तकनीकी विशिष्टता पर प्रकाश डाला गया है। इसमें नसीरुद्दीनशाह की फिल्मों का सिनेमाई भाषा के संदर्भों में अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. समांतर सिनेमा : एक परिचय 2. मध्यवर्गीय समाज और समांतर सिनेमा 3. नसीरूद्दीन शाह की फिल्मों के विभिन्न चरित्र 4. नसीर का अभिनय और फिल्म माध्यम 5.नसीरूद्दीनशाह की फिल्मों की भाषा 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

220. गिरि (राजीव रंजन)
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी भाषा के विकास और व्याप्ति की समस्याएँ।
निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी
Th 18871

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में राष्ट्रभाषा और राजभाषा शब्द और अवधारणा को लेकर विद्वानों, राजनेताओं के बीच में वाद-संवाद को परखने की कोशिश की गयी है। इसमें भारतीय संविधान-सभा में हुए बहस-मुबाहिसों की आलोचनात्मक पड़ताल की गयी है। असल में संविधान-सभा में मौजूद विभिन्न आवाजों द्वारा उठाए गए मसले ही

बाद में भी सुनाई पड़ते हैं। भारत की संविधान-सभा के सदस्य देश के बंटवारा के कारण एक अतिरिक्त दबाव महसूस कर रहे थे । उल्लेखनीय है कि संविधान-सभा की बहसों में भाषा संबंधी अध्याय को सबसे अंत में रखा गया था। इसमें हिन्दी भाषी इलाके की बोलियों/लोकभाषाओं द्वारा पेश चुनौतियों का विवेचन किया गया है। इसमें बताया गया है कि 19वीं सदी में शुरू हुआ हिन्दी-उर्दू संघर्ष आजादी के बाद भी जारी रहा । आजादी के बाद हिन्दी-उर्दू का विवाद इस कदर बढ़ता गया कि दंगा तक हुआ। लोगों की जानें गयी । इसमें अन्य भारतीय भाषाओं में हिन्दी के विरुद्ध जो मुहिम छिड़ा, उसका विवेचन किया गया है। आजादी के आंदोलन के दिनों में दक्षिण भारत के जिन नेताओं ने हिन्दी का प्रचार किया था। आजादी के बाद हिन्दी के कट्टर विरोधी हो गए । इसका विश्लेषण किया गया है। इसमें प्रिंटिंग प्रेस के आरंभ और विकास की कहानी बतायी गयी है। हिन्दी भाषा के बड़े और छोटे प्रकाशकों के विकास को बताया गया है। इसमें हिन्दी प्रकाशन के दिल्ली केंद्रीकरण को भी देखा गया है। इसमें पत्रिकाओं के प्रकाशन के आरंभ ओर विकास का चित्र दिखाने का प्रयास किया गया है। प्रिंटिंग प्रेस, प्रकाशन-संस्थान, पत्र-संस्थान और पत्र-पत्रिकाओं के विकास ने हिन्दी का विकास किया है तथा व्याप्ति को भी बढ़ाया है। इसमें बताया गया है कि राजनीतिक प्रतिनिधित्व में कैसे परिवर्त्तन आया है और परिवर्तन का भाषा पर क्या असर पड़ा है। इससे भाषा की ताकत कैसे बढी है। इसमें लघु पत्रिका आंदोलन को विवेचित किया गया है। विश्व हिन्दी सम्मेलन की कहानी बतायी गयी है। इसमें बताया गया है कि मनी मार्केट और मीडिया से होकर लोकप्रिय संस्कृति बढ़ती है और विकसित होती है इसमें रेडियो की भाषा और टेलीविजन की भाषा को विश्लेषित किया गया है । हिन्दी की बढ़ती ताकत का खुलासा किया गया हैं । रेडियो, टेलीविजन और मनोरंजन उद्योग ने हिन्दी को नयी ऊँचाई प्रदान की है।

विषय सूची

1. स्वातंत्र्योतर हिन्दी भाषा के प्रश्न 2. हिन्दी भाषा के विकास के समस्यात्मक बिंदु 3. हिन्दी भाषा क्षेत्र में संस्थाओं का विकास 4. हिन्दी भाषा में सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन और भाषागत प्रश्न 5. हिन्दी और मनोरंजन-उद्योग. 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

221. चौधरी (बबीता)

रामनरेश त्रिपाठी के साहित्य मे राष्ट्र की संकल्पना।

निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

Th 18862

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में राष्ट्र और राज्य के स्वरूप को स्पष्ट किया गया हैं। साथ ही राष्ट्र और राष्ट्रीयता, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता, पूर्व और पश्चिम का चिंतन इसी अनुक्रम में राष्ट्र की संकल्पना की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक आधारभूमि प्रस्तुत की गयी है। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीयता के विकास की प्रक्रिया का विवेचन किया गया है। इसके अन्तर्गत राष्ट्र की प्राचीन और नवीन अवधारणा (भारतीय संदर्भ में), नवजागरण और भारतीय राष्ट्रीयता की प्ररेणा भूमि, स्वाधीनता आन्दोलन और राष्ट्रीयता पर प्रकाश डाला गया है। रामनरेश त्रिपाठी के साहित्य-सृजन के प्रेरणा-स्रोत, उनके व्यक्तित्व और अंतर-मानसिकता, हिन्दी कविता की राष्ट्रीय चेतना और त्रिपाठी जी का साहित्य सृजन और सांस्कृतिक काव्य-संवेदना का विकास एवं रामनेश त्रिपिाठी के साहित्य पर प्रकाश डाला गया है। रामनरेश त्रिपाठी के साहित्य के परिप्रेक्ष्य में परंपरा और संस्कृति, परंपरा और आधुनिकता, गद्य-सृजन की विशेषता और साहित्य की मूल संवेदना पर प्रकाश डाला गया है। त्रिपाठी जी का रामधारी सिंह 'दिनकर', मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवियों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शिल्प संबंधी सभी प्रवृतियों के आधुनिक विकास दिखलाते हुए त्रिपाठी जी की शिल्प प्रवृति पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही भाषा, काव्य-रूप, बिंब-विधान प्रतीक, अप्रस्तुत योजना पर अलग-अलग विचार किया गया है।

विषय सूची

1. राष्ट्र की संकल्पना : स्वरूप, दृष्टि और दिशा 2. राष्ट्र की संकल्पना और स्वाधीनता आन्दोलन 3. रामनरेश त्रिपाठी की सृजनात्मक पृष्ठभूमि 4. राष्ट्र की संकल्पना और रामनरेश त्रिपाठी के साहित्य की मूल अन्तर्वस्तु 5. रामनरेश त्रिपाठी का समकालीन (तद्युगीन) कवियों से तुलनात्मक अध्ययन । 6. राष्ट्र की संकल्पना और रामनरेश त्रिपाठी का अभिव्यंजना शिल्प। उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

222. जैन (कीर्ति)

समकालीन हिंदी कविता में स्त्री-अस्मिता और वर्ग-चेतना।

निर्देशक : प्रो. मोहन

Th 18848

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में समकालीनता की अवधारणा और उसके स्वरूप पर विचार किया गया है। साथ ही साथ समकालीनता के पर्याय या समरूप दिखाई पड़ने वाले पदबंधों में भेद दर्शाया गया है। समकालीन कविता के स्वरूप को समझते हुए उसकी मूल चिंताओं को उठाया गया है। समकालीन कविता का काल-बोध की अपेक्षा युग-चेतना की कविता के रूप में स्थापित किया गया है। निम्नवर्गीय, दलित, बाल, समलैंगिक, आदिवासी अस्मिताओं की सीमाओं और संभावनाओं को प्रस्तुत किया गया है। स्त्री-अस्मिता के अंतर्गत स्त्री के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक संदर्भों के साथ-साथ स्त्री-अस्मिता को धुधलाती स्त्री-देह और भूमंडलीय दौर में स्त्री छवि को देखा गया है। स्त्री-मुक्ति की दशा और दिशा पर विचार करते हुए सर्वप्रथम वैचारिक धरातल पर मुक्त होने को महत्त्वपूर्ण माना गया है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में भी स्त्री की पहचान को राष्ट्रवादी, प्रगतिशील, दलित, सांप्रदायिक रूपों में चिन्हित किया गया है। वर्ग-चेतना को व्याख्यायित करते हुए जाति, वर्ग, वर्ण की पारस्परिकता सिद्ध की गई । वैश्वीकृत समाज ने वर्गीय-चेतना का जो स्वरूप निर्धारित किया है उसे भी परखने का इसमें प्रयास किया गया है। वर्ग-चेतना में उन स्थलों को चिन्हित किया गया है जहां समकालीन कवियों की चेतना निम्न वर्ग के साथ जुड़ती है और निम्न, मध्य व उच्च वर्ग के अंतर्विरोधों को उजागर करती चलती है। स्त्री-अस्मिता और वर्ग-चेतना के द्वंद्वात्मक संबंधों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। समकालीन हिंदी कविता में भाषा और शिल्प की पहचान का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. विषय-विवृति 2. स्त्री-अस्मिता और वर्ग-चेतना 3. समकालीन हिंदी कविताः स्त्री-अस्मिता 4. समकालीन हिंदी कविता : वर्ग-चेतना 5. समकालीन हिंदी कविताः स्त्री-अस्मिता ओर वर्ग-चेतना का द्वंद्व 6.समकलीन हिंदी कविता : भाषा और शिल्प की पहचान 7. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

223. झा (गुंजन कुमार)

स्वतंत्रतापूर्व हिंदी नाटकों में गीत एवं संगीत की भूमिका

निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

Th 18846

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में नाटक और गीत-संगीत के संबंधों पर विचार करते हुए नाट्योत्पत्ति में गीत-संगीत की भूमिका को जानने की कोशिश की गयी है। भरतकृत 'नाट्यशास्त्र' मे नाट्य-गीत और संगीत पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। और नाटकों में उनकी महत्ता प्रतिपादित की गई है। नाट्यशास्त्र में गीत-संगीत के वर्णन को समझने-समझाने का प्रयास किया गया है। इसमें संस्कृत नाट्य-साहित्य के विकास में गीत-संगीत की भूमिका पर विचार किया गया है। इसमें संस्कृत के महत्त्वपूर्ण नाटककारों के नाटाकों में गीत-संगीत की क्या स्थिति थी इसका अध्ययन किया गया है। गीत-संगीत के संदर्भ में संस्कृत नाटकों के अवसान ओर मध्यकालीन नाट्य-परंपराओं के उत्थान एवं विकास का भी आकलन किया गया है। इसके तहत भारतेंदु के सांगीतिक व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए उनके प्रमुख नाटकों भारत दुर्दशा और अंधेर नगरी में नियोजित गीतों को आधार बनाकर नाटक में उनकी भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। भारतेंदु के अन्य नाटकों के साथ ही युगीन अन्य नाटककारों के नाटकों में प्रयुक्त गीत-संगीत पर भी बात की गयी है। इसमें जयशंकर प्रसाद के सांगीतिक परिवेश और व्यक्तित्व पर बात करते हुए उनके नाटकों में प्रयुक्त गीतों को आधार बनाकर नाटाकों में उनकी भूमिका की पड़ताल की गयी है। इसके बाद प्रसाद-युगीन अन्य नाटककारों के नाटकों में प्रयुक्त गीतों पर संक्षिप्त अध्ययन किया गया है। पारसी नाटकों में प्रयुक्त संगीत पर लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत और उपशास्त्रीय संगीत के प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही पारसी नाटकों में प्रयुक्त गीतों के विभिन्न प्रकारों की चर्चा भी की गयी है। इसमें पृथ्वीराज कपूर के व्यक्तित्व में संगीतिकता को स्पष्ट करते हुए पृथ्वी थियेटर के नाटकों में प्रयुक्त गीतों को आधार बनाकर उनकी उपयोगिता को परखने का प्रयास किया गया है। इसमें, इप्टा नाट्य-आंदोलन में गीत और संगीत की भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इप्टा ने अपने ध्येय में गीत-संगीत का किस हद तक रचनात्मक उपयोग किया है। इसको समझने-समझाने का प्रयास किया गया है। अंततः यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार गीत एवं संगीत ने हिन्दी नाटकों

को आवाम तक अपनी पहुंच कायम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विषय सूची

1. नाटक, गीत एवं संगीत 2. नाटकों में गीत एवं संगीत का इतिहास 3. भारतेंदुयुगीन नाटकों में गीत एवं संगीत की भूमिका 4. प्रसाद युगीन नाटकों में गीत एवं संगीत की भूमिका 5. पारसी रंगमंच व गीत एवं संगीत 6. पृथ्वी थिएटर में गीत एवं संगीत 7. भारतीय जननाट्य संघ (इप्टा) में गीत एवं संगीत। उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

224. नरगिस बानो

नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य में स्त्री-विमर्श ।

निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

Th 18850

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य में स्त्री-विमर्श के मुख्य बिंदुओं का विश्लेषण किया गया है। नासिरा शर्मा के कृतित्व के अंतर्गत उनके उपन्यास साहित्य, कहानी साहित्य, लेख संग्रह, अनुदित रचनाएं, बाल-साहित्य, टेली-फिल्में, लेख का क्रमानुसार वर्णन किया गया है इसके अतिरिक्त नासिरा शर्मा के समस्त कहानी संग्रहों व उपन्यास साहित्य की भूमिका संक्षेप में प्रस्तुत की गई है। इसमें स्त्री आंदोलन से तात्पर्य : पृष्ठभूमि, युरोपीय आंदोलन की पृष्ठभूमि, युरोप में स्त्री आंदोलन का आरंभ, यूरोप में स्त्री आंदोलन के प्रमुख मुद्दे, प्रमुख स्त्री आंदोलनकारी, भारतीय समाज : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री की स्थिति, स्त्री सुधार आंदोलन, स्वतंत्रता आंदोलन और स्त्री आंदोलन की उपलब्धियां, स्वाधीनता के बाद का स्त्री-मुक्ति आंदोलन और उसके विविध रूप का विवेचन किया गया है। स्त्री की समाजिक निर्मिति और साहित्यिक रूपायन पर प्रकाश डाला गया है। जिसमे अधुनातन लेखिकाओं के प्रतिनिधि उपन्यासों का विश्लेषण किया है । नासिरा शर्मा के उपन्यासों और कहानियों को केंद्र में रखकर स्त्री प्रश्न पर विचार किया गया है। इसके अंतर्गत- देह का प्रश्न, विवाह और उससे जुडे प्रश्न, देहज की समस्या, शिक्षा का प्रश्न, कामकाजी स्त्री की समस्या, प्रेम में विश्वासघात और स्त्री, अस्मिता का प्रश्न, सांप्रदायिकता का प्रयन पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। इसमे स्त्रीवादी

साहित्य की भाषा, नासिरा शार्मा के साहित्य की भाषिक संरचना, अभिव्यक्ति, पात्र एवं परिवेश के अनुकूल भाषिक चयन, प्रसंगानुकूल भाषिक चयन, निश्चयात्क वाक्य प्रयोग, प्रकृति चित्रण, शव्द चयन एवं शब्द प्रयोग, शैली आदि का विवेचन किया गया है।

विषय सूची

1. नासिरा शर्मा : साहित्य एवं जीवन दृष्टि 2. स्त्री आंदोलन का इतिहास : युरोपीय आंदोलन, नवजागरण से लेकर अद्यतन 3. स्त्री-विमर्श : अवधारणा एवं स्वरूप, स्त्री की सामाजिक निर्मिति और साहित्यिक रूपायन : संदर्भ - हिंदी कथा साहित्य (प्रतिनिधि उपन्यास) 4. नासिरा शार्मा के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श का स्वरूप और इसकी दिशाएं 5. नासिरा शर्मा की कहानियों में स्त्री-विमर्श का स्वरूप और इसकी दिशाएं 6. भाषा और शिल्प गठन में स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति 7. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची। परिशिष्ट ।

225. प्रतिमा

पूर्वी दिल्ली की हिंदी में 'कोड-मिश्रण' व 'कोड-अंतरण': समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. अनीता गुप्ता

Th 18868

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में समाजभाषाविज्ञान के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान संदर्भों में इसके अध्ययन के आयामों पर रोशनी डाला गया है। इसमें कोड-मिश्रण : सैद्धातिक संकल्पनाएं में विभिन्न संकल्पनाओं की चर्चा की गई है। ये सारी संकल्पनाएं आपस में जुड़ी हुई हैं जिनको जहां तक संभव हो सका है स्पष्ट करने की कोशिश की है। वक्ता जब एक भाषा बोलते-बोलते दूसरी भाषा के वाक्य प्रयोग करने लगे तो उसे कोड-अंतरण कहते है। इसमें कोड अंतरण को परिभाषित किया गया है। पूर्वी दिल्ली के अंतरर्गत मयूर विहार, शाहदरा, पटपड़गंज, और प्रीत विहार आदि क्षेत्रों की हिंदी का अध्ययन किया गया हैं इसके अंतर्गत सिर्फ पूर्वी दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं का जिक्र मात्र नही है। बल्कि वहां पर वह भाषा क्यों बोली जा रही है इसके कारणों की खोज भी की गई है। वहां किस प्रकार की भाषा और शैली का प्रयोग किया जाता है। किस प्रकार हिंदी भाषा के

विकास में भाषा और शैली में होन वाला यह बदलाव योगदान दे रहा है इस बदलाव का ही अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में परंपरागत व्यवसायों में काम करने वाले लोगों की भाषा के माध्यम से कोड-मिश्रण व कोड-अंतरण के भेदों को समझाने का प्रयास किया गया है लघु उद्योगों से लेकर रिक्शेवाले, फेरीवाले, यहां तक की परचून की दूकान वाले की भाषा का अध्ययन किया गया है। यह शैक्षिक संस्थानों में प्रयुक्त हिंदी में कोड-मिश्रण व कोड-अंतरण का अध्ययन-विश्लेषण करता है। इसके अंतर्गत डी टी सी, बैंक, बी एस ई एस, एम टी एन एल, दिल्ली जल बोर्ड आदि सरकारी व गैर सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त हिंदी का अध्ययन किया गया है।

विषय सूची

1. समाजभाषाविज्ञान 2. कोड-मिश्रण : सैद्धातिक संकल्पनाएं 3. कोड-अंतरण 4. पूर्वी दिल्ली के क्षेत्रों का सामजभाषावैज्ञानिक अध्ययन 5. परंपरागत व्यवसायों में कोड-मिश्रण व कोड-अंतरण 6. शैक्षिक संस्थानों में प्रयुक्त हिंदी में कोड-मिश्रण व कोड-अंतरण 7. प्रशासनिक क्षेत्रों में प्रयुक्त हिंदी में कोड-मिश्रण व कोड-अंतरण। 8. उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

226. पार्वती

रसखान और बोधा की प्रेम-व्यंजना का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

Th 18856

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में स्पष्ट किया गया कि किस प्रकार कवियों का प्रेम अपने अंतर्गत अंतनिर्हित विशेषताओं को समेटे है। शोध-प्रबंध में रसखान और बोधा के काव्य में वर्णित प्रेम के स्वरूप, प्रेम के संयोग पक्ष, वियोग पक्ष आदि भाषागत विशेषताओं को आधार बनाकर तुतलनात्मक रूप में अध्ययन किया गया है। इसमें प्रेम शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ और उसकी परिभाषा को बताते हुए प्रेम के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही प्रेम के विविध पर्यायों को बताया गया है। रसखान और बोधा के जीवन वृत्त एवं व्यक्तित्व का आकलन करने के पश्चात् उनके कृतित्व के अंतर्गत रसखान और बोधा कृत रचनाओं और उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया

गया है। रसखान के काव्यों में प्रेम के स्वरूप और प्रेम की विशेषताओं का अध्ययन करने के साथ रसखान के प्रेम के आलंबन और उनके वर्णन के साथ उनके प्रेम के उद्दीपन और उनके वर्णन का अध्ययन किया गया है। बोधा की दृष्टि से प्रेम का क्या महत्व है और उसकी कया विशेषताएं हैं? इन्हें स्पष्ट करने के साथ-साथ बोधा ने अपने काव्य में प्रेम के जो आलंबन एवं उद्दीपन रखे हैं, उन्हें प्रकाशित किया गया है। रसखान और बोधा के काव्य में निहित प्रेम का स्वरूप, विशेषताओं, आलंबन आदि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। रसखान और बोधा के प्रेमी हृदय का, उनके काव्य में प्रकाशित प्रेम के उज्ज्वल रूप का वर्णन किया गया है। दोनों कवियों के काव्य में चित्रित प्रेमानुभूति को विभिन्न स्तरों पर वर्णित किया गया है।

विषय सूची

1. प्रेम-व्यंजनाः अभिप्राय एवं स्वरूप 2. रसखान और बोधा : जीवनवृत्त और कृतित्व 3. रसखान के काव्य में प्रेम-व्यंजना 4. बोधा के काव्य में प्रेम व्यंजना 5. रसखान और बोधा के काव्य में प्रेम-व्यंजना की तुलना 6. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

227. भारद्वाज (प्रवीन)

साठोत्तर महिला उपन्यासकारों के लेखन में युग चेतना के विविध आयामः 1960 से 1980 तक ।

निर्देशक : डॉ. हरीश नवल

Th 18860

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध 1960 से 1980 की महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में व्याप्त युगीन चेतना को व्यक्त करता है। इसमें उपन्यास विधा को स्पष्ट करते हुए साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास साहित्य में महिला लेखन का एक प्रवृतिगत परिदृश्य दिया गया है। छठें दशक से पूर्व के महिला उपन्यास लेखन की संक्षिप्त पूर्वपीठिका दी गई हैं इसके बाद 1960 से 1980 तक की महिला लेखिकाओं और उनके उपन्यासों का परिचात्मक विवरण दिया गया है। युग चेतना की अवधारणा एवं उसे प्रभावित करने वाले राजनैतिक, सामजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक इत्यादि तत्वों को व्याख्यायित किया

गया है। इसमें धार्मिक विश्वास और धार्मिक आडम्बर के माध्य अन्तर को ध्याान में रखते हुए उपन्यासों में समाहित धार्मिक चेतना को दिखाया गया है। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति पर निरंतर पाश्चातय संस्कृति के सस्ते चश्मों की बढ़ती जा रही परछाइयों को भी स्पष्ट किया गया है।

विषय सूची

1. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास साहित्य में महिला लेखन : एक परिदृश्य 2. साठोत्तरी महिला उपन्यास साहित्य और उपन्यासकार 3. युग चेतना और उसके विविध आयाम 4. युग चेतना : राजनीतिक आयाम (साठोत्तरी महिला उपन्यास संदर्भ) 5. युग चेतना : सामाजिक एवं आर्थिक आयाम (साठोत्तरी महिला उपन्यास संदर्भ) 6. युग चेतना : धार्मिक तथा सांस्कृतिक 7. उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

228. मिश्र (शशिभूषण)

हिन्दी के नए विमर्श और भक्ति-साहित्य का पुनर्मूल्यांकन।

निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

Th 18870

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में भक्ति के उद्‌भव और भक्तिकाल के विकास पर प्रकाश डाला गया है इसमें भक्ति की उत्पति की परिस्थितियों और कारक, इसके प्रसार और अखिल भारतीय चरित्र का विश्लेषण करते हुए उत्तर तथा दक्षिण के भक्ति साहित्य के स्वरूप की तुलना की गई हैं । शोध प्रबंध में भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति के अन्तःसंबंधों की पहचान, जातीय चेतना के विकास और लोकभाषाओं की विविधता तथा समान्ती मुल्यों और लोक जीवन की अभिव्यक्ति का चित्रण करते हुए नवीन जीवन-मुल्यों की स्थापना का प्रयास किया गया है। इसमें आचार्य शुक्ल और आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के चिंतन आधार और दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। शोध प्रबंध में भक्ति साहित्य का पुनर्मुल्यांकन में इतिहासकारों की भूमिका नई अवधारणाओं और द्वंद्व पर प्रकाश डाला गया है। इसमें निर्गुण भक्ति कविता और कबीरदास, इस्लाम, सूफी साहित्य और जायसी, सगुण भक्ति कविता और तुलसीदास तथा मीरा और सूरदास की कविता का नए विमर्शों के संदर्भ में पुर्नमुल्यांकन किया गया है।

विषय सूची

1. भक्ति का उद्‌भव और भक्तिकाव्य का विकास 2. भक्ति-साहित्य में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति 3. भक्ति-साहित्य संबंधी प्रारंभिक स्थापनाएं और नए विमर्शों की भूमिका 4. भक्ति-साहित्य के पुनर्मुल्यांकन का प्रश्न और इतिहासकारों की भूमिका 5. भक्ति-साहित्य संबंधी नए विवाद और नए विमर्श 6. नए विमर्शों के सन्दर्भ में भक्ति-साहित्य का पुनर्मूल्यांकन 7. उपसंहार । परिशिष्ट ।

229. मीना

दलित समाज की समस्याओं के सम्प्रेषण में हिन्दी जनसंचार माध्यमों की भूमिका : 2007-08 के अंकों में प्रकाशित सामग्री का मूल्यांकन ।

निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

Th 18854

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में दलित समाज की अवधारणा, दलित विमर्श की अवधारणा एवं इसका विकास व वर्तमान चुनौती का विस्तार से वर्णन है। इसमें माध्यमों को परिभाषित करने के साथ-साथ इनके प्रकार, स्वरूप, प्रक्रिया व इतिहास के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। दलित समाज का यथार्थ, दलित समाज की जरूरतें, कामनाएं ओर अपेक्षाएं, दलित समाज के माध्यम और दलित संवेदनशीलता के प्रश्नों पर विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है । जनसंचार माध्यमों द्वारा दलित विषयों से संबंधित प्रचारित, प्रसारित व सम्प्रेषित सूचनाओं का वर्गीकरण करके विश्लेषण किया गया है। दलित संवेदीकरण का अभाव, संवेदनहीनता व फालोअप का अभाव, दलित कर्मियों का अभाव, दिल्ली विश्वविद्यालय समुदाय के सर्वे का विश्लेषण, दलित बुद्धिजीवियों व मीडिया विशेषज्ञों की राय का विस्तारपूर्वक वर्णन है। जनसंचार माध यमों की दलित समाज की समस्याओं के सम्प्रेषण में भूमिका को स्पष्ट करते हुए यह निष्कर्ष निकलता है कि मीडिया के बदलते स्वरूप जिसमें मीडिया एक मिशन न होकर एक कारपोरेट संस्थान है जिसमें संपादक की भूमिका भी बदली है और दलित विषयों से संबंधित सूचना एक वस्तु (प्राडक्ट) है, का विस्तार से वर्णन है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. दलित समाज की अवधारणा 3. जनसंचार माधम 4. वर्तमान दलित समाज 5. जनसंचार माध्यम और दलित सूचनाओं का विश्लेषण 6. जनसंचार माध्यमों में प्रसारित समस्याएं 7. निष्कर्ष । संदर्भ ग्रन्थ सूची । परिशिष्ट ।

230. मेहता (रक्षा)

साठोत्तरी हिन्दी कविता में आधुनिक तथा उत्तर आधुनिक दृष्टियों का द्वंद्व।

निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

Th 18857

सारांश

साठोत्तरी कविता द्वंद्व, तनाव, संघर्ष व अंतर्विरोधों की कविता है। जिस समय साठोत्तरी कविता सामने आई थी, उस समय प्रेम, सौहार्द्र, भाईचारा, देशप्रेम, सहानुभूति, परोपकार, समानता व स्वतंत्रता जैसे आधुनिक मूल्य प्रश्नांकित हो रहे थे तथा इसके विरोध में अनास्था, कुण्ठा, संत्रास, नैराश्य, स्वार्थ, अवसरवाद आदि मूल्य जन्म लेने लगे थे । देश-विदेश सर्वत्र समय-समय पर होने वाले युद्धों तथा प्राकृतिक प्रकापों के फलस्वरूप भारत में ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दुर्दशा का वातावरण था । इसने व्यक्ति के भीतर के मानव को मारकर उसे पशु के समान स्वार्थी बना दिया था । स्वतंत्रता प्राप्ति के सुनहरे स्वप्नों से भारतीयों का मोहभंग हो चुका था। राजनीति निरंतर भ्रष्ट और जनता के शोषण के तरीके ईज़ाद कर रही थी। समाज नामक संस्था से व्यक्ति का विश्वास उठ चला था। अर्थव्यवस्था विकलांग होने लगी थी तथा धर्म व संस्कृति का अस्तितव बेमानी होने लगा था। विसंगति का वातावरण जन्म ले रहा था। साठोत्तरी कवियों ने देश की इस दुर्दशा का विस्तृत फलक पर चित्रण किया है। मानव संवेदना के अमानवीकृत होते युग में साठोत्तरी कविता ने जोश के साथ बुरे की बुराई को भी उभारा है। किंतु दिन पर दिन गहराते राजनीतिक, सामजिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक संकट ने सामान्य वर्ग पर जो अमानवीय अत्याचार व अनाचार किया है उसके फलस्वरूप साठोत्तरी कवि विक्षुब्ध व विचलित हो उठे है। इस विक्षोभ व विचलन के कारण संघर्षरत होते हुए भी कहीं-कहीं टूटन, तनाव व द्वंद्व की अभिव्यक्ति साठोत्तरी कवि के लिए स्वाभाविक है।

विषय सूची

1. आधुनिकता की अवधारणा : पृष्ठभूमि, उदय और विकास 2. उत्तर आधुनिकता की अवधारणा : विविध व्याख्याएं 3. साठोत्तरी कविता : प्रमुखकवि और उनका रचना संसार 4. आधुनिकता तथा उत्तर आधुनिकता का द्वंद्व और साठोत्तरी हिन्दी कविता 5. साठोत्तरी कविता से समकालीन कविता तक : आधुनिक तथा उत्तर-आधुनिक उतार-चढ़ाव 6. साठोत्तरी कविता में भाषा का बदलता स्वरूप : आधुनिक तथा उत्तर-आधुनिक धरातल 7. उपसंहार । परिशिष्ट ।

231. यादव (प्रोमिला)

मीरा तथा रसखान की भक्ति-भावना का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. महेश कुमार

Th 18874

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में भक्ति के स्वरूप से संबन्धित सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। भक्ति की व्युत्पत्ति और परिभाषाओं को स्पष्ट करते हुए भक्ति के विभिन्न प्रकार, तत्त्वादि बताए गए है। भक्ति की प्रचलित-अप्रचलित धारणाओं को विस्तार से समझाते हुए नारद, शाण्डिल्य आदि विद्वानों के मत-मतान्तरों का भी उल्लेख है। इसमें कृष्ण-भक्ति-काव्य-परम्परा की पूर्वपीठिका पर प्रकाश डाला गया है। 'कृष्ण' शब्द की व्युत्पत्ति तथा उसका सामान्य अर्थ समझाया गया है। तत्पश्चात् कृष्ण-भक्ति-काव्य-परम्परा का विश्लेषण किया गया है। मीरा एवं रसखान के संक्षिप्त जीवन-परिचय के साथ-साथ उनके कृतित्व का भी विहंगम सर्वेक्षण किया गया है। मीरां एवं रसखान के आराध्य कृष्ण के स्वरूप तथा उनके लीला-गायन इत्यादि को तुलनात्मक दुष्टि से जांचा-परखा गया है। आराध्य के स्वरूप की चर्चा करते हुए कृष्ण के बाह्म एवं आन्तरिक-दोनों ही स्वरूपों का मनन हुआ है। मीरां एवं रसखान की उपासना-पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं । यह भी विचार किया गया है कि आलोच्य कवियों की उपासना का स्वरूप क्या था और उन्होंने उपासना को कैसे परिभाषित किया है। तदुपरान्त भक्ति के प्रकार एवं तत्त्वों का विस्तृत चित्रण है। मीरां एवं रसखान के भक्ति काव्य में व्याप्त माधुर्य भावना का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रेम, माधुर्य, मधुरा भक्ति की विभिन्न परिभाषाएं एवं स्वरूप वर्णित है। यहां संयोग, वियोग, प्रभृति, मधुरा भक्ति के भेदों

का भी विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. विषय-प्रवेश : भक्ति का स्वरूपात्मक एवं सैद्धान्तिक विवेचन 2. कृष्ण-भक्तिकाव्य-परम्परा : पूर्वपीठिका 3. मीरा तथा रसखान : जीवनवृत्त एवं परिवेश 4. मीरा एवं रसखान के आराध्य का स्वरूप तथा लीला गायन : एक तुलनात्मक अध्ययन 5. मीरा एवं रसखान का भक्ति-भाव : एक तुलनात्मक अध्ययन 6. मीरा एवं रसखान की मधुरा भक्ति : एक तुलनात्मक अध्ययन 7. उपसंहार। परिशिष्ट। सहायक ग्रन्थ सूची ।

232. राय (एनी)

प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के कथा-साहित्य में व्यक्त कृषक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

Th 18853

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में प्रेमचंद और फकीर मोहन के व्यक्तितव, युग और कृतित्व को अलग-अलग रूपों में गंभीरता के साथ देखने तथा दिखाने का प्रयत्न किया गया है। हिन्दी कथा साहित्य तथा उसमें प्रेमचंद का स्थान पर विचार किया गया है। हिन्दी कथा साहित्य की दो प्रमुख विधाओं, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद के योगदान के बारे में चर्चा की हैं । ओड़िया कथा साहित्य में फकीर मोहन के अवदान के बारे में प्रकाश डाला है। कृषकों के सामाजिक ओर आर्थिक समस्याओं के विशेष संदर्भ में प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के कथा साहित्य पर दो अलग-अलग रूपों में प्रकाश डाला है। इसके साथ ही प्रेमचंद और फकीर मोहन के कथा-साहित्य में व्यक्त कृषक जीवन का तुलनात्मक अध्ययन किया है। 'गोदान' और 'छः माण आठ गुंठ' उपन्यास पर विशेष रूप से केन्द्रित रखा गया है।

विषय सूची

1. व्यक्तित्व, युग और कृतित्व 2. हिन्दी कथा-साहित्य और प्रेमचंद 3. ओड़िया

कथा-साहित्य और फकीर मोहन 4. प्रेमचंद और फकीर मोहन सेनापति के कथा साहित्य में व्यक्त कृषक जीवन 5. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

233. रेणु कुमारी

स्त्री-विमर्श का विशेष संदर्भ और मृणाल पाण्डे का साहित्य।

निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

Th 19095

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में स्त्री-विमर्श की वैचारिक संकल्पना को स्पष्ट करते हुए भारतीय व पाश्चात्य संदर्भों में इसके ऐतिहासिक विकास को रेखांकित किया है। हिन्दी साहित्य में व्यक्त स्त्री जीवन पर प्रकाश डाला है। मृणाल पाण्डे का व्यक्तिगत परिचय देते हुए उनकी पारिवारिक व परिवेशगत परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। मृणाल पाण्डे की कहानियों, उपन्यासों, नाटकों व निबंधों को केन्द्र में रखकर उनके साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री-जीवन के विविध पहलुओं को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। समकालीन महिला लेखन पर दृष्टिपात करते हुए उसमें मृणाली पाण्डे के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया गया है।

विषय सूची

1. स्त्री-विमर्श : वैचारिक व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. हिन्दी साहित्य मे स्त्री 3. मृणल पाण्डे : व्यक्ति एवं साहित्यकार 4. मृणाल पाण्डे के साहित्य में स्त्री-विमर्श की अभिव्यक्ति 5. समकालीन महिला लेखन में मृणाल पाण्डे का स्थान 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

234. विधुकेश विमल

कमलेश्वर के कथा-साहित्य का समाजशास्त्री अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. अरुणा गुप्ता

Th 18849

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में समाज की अवधारण, समाजशास्त्र का अर्थ और साहित्य के

समाजशास्त्र का स्वरूप निर्धारित करने का प्रयत्न किया गया है। विभिन्न विचारकों के मतों का संक्षिप्त परिचय दिया गया हैं भारत में समाजशास्त्रीय अध्ययन की परंपरा की संक्षिप्त चर्चा भी की गई है। इसमे कमलेश्वर के बहुआयामी व्यक्तित्व को समझने का प्रयत्न किया गया है। उपन्यासकार कहानीकार, मीडियाकर्मी, आंदोलनकर्ता, मित्र, पति आदि सभी रूपों को यथोचित जगह दी गई है। कमलेश्वर के रचनाकाल यानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का विस्तार से वर्णन किया गया है। कमलेश्वर के कथा साहित्य की राजनीतिक चेतना को स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वातंत्र्योत्तर -इन दो उपवर्गों में बांटा गया है। इनकी रचनाओं का आधार ग्रहण करते हुए युगीन सामाजिक और आर्थिक परिवेश के संदर्भों में परिवर्तित स्त्री-पुरुष के संबंधो को समझने का प्रयत्न किया गया है । भारतीय संदर्भ में स्त्री आन्दोलनों की स्थिति, हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का संक्षिप्त परिचय एवं उसके स्वरूप को समझने का प्रयत्न किया गया है। कमलेश्वर के कथा-साहित्य का विश्लेषण कर यह जानने का प्रयत्न किया गया कि इन संबंधों का संसार किस प्रकार टूटता है? उसकी क्या चिन्ताएं हैं, इस समूची प्रक्रिया के चालक सूत्र कौन से हैं और वे कहां तक प्रमाणित है? कमलेश्वर की रचनाओं, विशेषकर कहानियों में कस्बे का जीवन और वहां के जीवनमूल्यों के समाप्त होने की पीड़ा बडी गहराई, सूक्ष्मता से चित्रित हुई है। कमलेश्वर के उपन्यासों में भी उनका मैनपुरी कस्बा उपस्थित है। इनकी रचनाओं में पात्र आयातित न होकर उसी कस्बे के है। इसमें परिवेश, संस्कृति, मनोवृति, कस्बे की उजड़ने की पीड़ा, पात्र तथा कस्बे की भाषा - शीर्षक के अंतर्गत कसबाई जीवन को उसकी समग्रता में पहचानने का प्रयत्न किया गया है। कमलेश्वर की प्रतिबद्धता, आम आदमी की अवधारणा और राजनीतिक चेतना पर अलग से तर्काधारित निष्कर्ष दिए गए हैं।

विषय सूची

1. साहित्य का समाजशास्त्र : अवधारणा और स्वरूप 2. कमलेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 3. युगीन परिस्थितियाँ 4. कमलेश्वर के कथा-साहित्य की राजनीतिक चेतना 5. कमलेश्वर के कथा-साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंधों का समीकरण 6. कमलेश्वर के कथा-साहित्य में कस्बाई जीवन 7. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

235. श्रवण कुमार

छठे दशक के बाद के उपन्यासों में मुस्लिम-जीवन।

निर्देशिका : डॉ. अरुणा गुप्ता

Th 18858

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में इस्लाम के उदय, उसके प्रारंभिक इतिहास, पैगंबर मोहम्मद साहब के जीवन एवं दर्शन पर विचार किया गया। इस्लामिक दर्शन एवं उसकी प्रमुख विशेषताओं पर भी चर्चा की गई है साथ ही धार्मिक कर्मकांड एवं मान्यताओं का सविस्तार वर्णन भी किया गया है। भारत में मुसलमानों के आगमन एवं उससे पड़ने वाले प्रभावों पर विचार किया गया है। किस तरह दक्षिण एवं उत्तर भारत में मुसलमानों का प्रभाव अलग-अलग रूपों में पड़ा, इस पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। भाषा-साहित्य, राजनीतिक एवं संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभावों का जिक्र किया गया है। मध्यकालीन साहित्य में मुस्लिम धर्म, दर्शन तथा जीवन के संकेतों तथा पड़ने वाले प्रभावों को खोजने का प्रयास किया है। भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन साहित्य में वर्णित मुस्लिम जीवन पर विचार किया गया हैं । आधुनिक हिंदी साहित्य, विशेषतः प्रारंभिक उपन्यासों में वर्णित मुस्लिम-जीवन की चर्चा की गयी है। छठे दशक के बाद के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण उपन्यासों का विस्तार से वर्णन किया गया है जिनमें मुस्लिम-जीवन अपनी पूरी प्रमाणिकता के साथ उपस्थित है तथा हिंदी के कुछ अन्य महत्वपूर्ण उपन्यासों में वर्णित मुस्लिम जीवन पर भी विचार किया गया है। हिंदी साहित्य में कई ऐसे ऐतिहासिक एवं गैरऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए हैं जिनमें मुस्लिम समाज किन्हीं न किन्हीं रूपों में विद्यमान रहा है।

विषय सूची

1. इस्लाम : धर्म, दर्शन और संप्रदाय के रूप में 2. भारत में मुस्लिम समाज 3. छठे दशक से पूर्व के उपन्यासों में मुस्लिम जीवन 4. छठे दशक के बाद के महत्वपूर्ण उपन्यासों में मुस्लिम जीवन 5. मुस्लिम जीवन : समूचा परिदृश्य। उपसंहार । संदर्भ ग्रन्थ सूची।

236. शर्मा (ज्योति)

चरित्र परिकल्पना : चन्द्रगुप्त नाटक और चाणक्य सीरियल का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

Th 18867

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में सर्वप्रथम चरित्र परिकल्पना होती क्या है? इस विषय पर भारतीय और पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य में विचार किया गया है। पात्र और चरित्र की परिकल्पना के अंतर को पाठ और प्रस्तुति के आधार पर समझा गया है। चरित्र निर्माण की प्रक्रिया जिसे भरतमुनि 'वेषाच्छादन' और स्तानिस्लावस्की 'परकाया प्रवेश' कहते हैं, दोनों माध्यमों के दायरे में इस प्रक्रिया से अवगत होने की कोशिश की गई है। दृश्य माध्यमों के स्वरूप को समझते हुए इस माध्यमों यानि रंग नाटक और टी.वी. धारावाहिक के स्वरूप को निश्चित करने वाले विभिन्न तत्व चरित्र के साथ मिलकर किस प्रकार प्रभावी और प्रेषणीय बनते हैं इस प्रक्रिया को समझने की भी कोशिश की है। भारतीय और विश्व परिदृश्य मे टेलीविज़न के इतिहास, उसके स्वरूप और विकास की कहानी कहता है। भारत में टेलीविज़न के तकनीकी और समाजिक, सांस्कृतिक विकास के विविध चरणों में टेलीविज़न की बनती, बदलती भूमिका को समझने की कोशिश है। साथ ही भारतीय परिदृश्य में टेलीविज़न धारावाहिकों की भूमिकाओं का समयांतराल मे विश्लेषण भी किया गया है। चरित्र परिकल्पना की दृष्टि से चन्द्रगुप्त नाटक और चाणक्य सीरियल का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। विविध चरित्रों की दो भिन्न माध्यमों में शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक रूपों की तुलना, मूल्य और युगबोध की दृष्टि से तुलना, दो भिन्न माध्यमों के तकनीकी अन्तर की दृष्टि से तुलना और दोनों माध्यमों की अपनी-अपनी दृश्य भाषाओं की तुलना की गई है। चरित्र परिकल्पना के संदर्भ में दो भिन्न माध्यमों की तुलना करते हुए चरित्र क्या है ? चरित्र निर्माण की दो भिन्न माध्यमों में निर्माण प्रक्रिया और प्रभावों की पड़ताल का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. चरित्र परिकल्पना : स्वरूप और सिद्धांत 2. दृश्य माध्यम और चरित्र परिकल्पना 3. टेलीविजन का विकासात्मक इतिहास बनाम ऐतिहासिक सांस्कृतिक

धारावाहिकों के बदलते मुहावरे 4. चरित्र परिकल्पना की दृष्टि से चन्द्रगुप्त नाटक और चाणक्य सीरियल का तुलनात्मक अध्ययन 5. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

237. शर्मा (विधि)

अज्ञेय और टी. एस. इलियट की आलोचना दृष्टि : तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा
Th 18855

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में अज्ञेय और इलियट के आरंभिक जीवन, शिक्षा-दिक्षा, पारिवारिक जीवन आदि को केंद्र में रखते हुए उनके रचनात्मक विकास को विस्तार से बताया गया है । अज्ञेय और इलियट के परंपरा-संबंधी विचारों का आंकलन किया गया हैं दोनों ने परंपरा को रूढ़ि से अलगाते हुए उसे नया संदर्भ देकर आधुनिक आलोचनात्मक शब्दावली का अंग बनाया । अज्ञेय और इलियट के परंपरा-संबंधी विचारों की रचनात्मक संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। अज्ञेय और इलियट दोनों ने अपनी पूर्ववर्ती रोमैंटिक कविता का निषेध करते हुए भाव की तुलना में विचार को अधिक महत्व दिया । काव्यभाषा की मूल समस्या शब्द और उसके अर्थ के संबंध से जुडी है। शब्द में अर्थ कहां से आता है, क्यों और कैसे बदलता है, ये भाषा से संबंधित ऐसे मूल प्रश्न हैं जिनसे प्रत्येक कवि जूझता है। यहां अज्ञेय और इलियट का विशेष संदर्भ देते हुए काव्यभाषा की इस समस्या पर विस्तार से विचार किया गया है। काव्यभाषा में छंद और लय को लेकर अज्ञेय और इलियट की जो धारणा रही है उसे यहां विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया है। अज्ञेय और इलियट की रचनाधर्मिता को धर्म, राजनीति और संस्कृति से संबद्ध विचारों के बिना संपूर्णता में नहीं समझा जा सकता । अतः अज्ञेय और इलियट के राजनीतिक और समाजिक विचारों को समझकर ही हम उनकी रचना की शक्ति और सीमाओं को अच्छी तरह पहचान सकते हैं । दोनों की रचना और आलोचना-दृष्टि में कई सारे अंतर्विरोध हैं, जिसकी कुंजी हमें उनके धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों में मिलती है। जिनको जाने बिना उनकी काव्य-चेतना के विकास और आलोचनात्मक विकास को नहीं समझा जा सकता । अज्ञेय और इलियट का चिंतन जिन बिंदुओं पर मिलता दिखाई देता है उनमें काल का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके काल चिंतन

के तीन चरण हैं पहले चरण में काल की धारणा को परपंरा के संदर्भ में व्याख्यायित किया गया हैं । दूसरे चरण में वर्तमान के महत्व को विस्तार से रेखांकित किया गया है। तीसरे चरण में काल-चिंतन में क्षण के महत्व को बताया गया है ।

विषय सूची

1. जीवन-संघर्ष : रचना की कवायद 2. साहित्य सिद्धांत : परंपरा और मौलिकता 3. गैर-रोमैंटिक कविता की अवधारणा और निर्वैयक्तिकता 4. काव्यभाषा : विविध आयाम 5. धर्म, राजनीति और संस्कृति : अज्ञेय तथा इलियट के संदर्भ में 6. काल-चिंतन : अज्ञेय और इलियट 7. उपसंहार। जीवन-रेखा : अज्ञेय और इलियट। पुस्तक-सूची ।

238. स्नेह लता

मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में लोक जीवन की अभिव्यक्ति ।

निर्देशक : प्रो. अपूर्वानंद

Th 18877

सारांश

मैत्रेयी पुष्पा बीसवीं सदी कें अंतिम दशक की प्रतिनिधि साहित्यकारों में एक है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएं गाँव-कस्बों के परिवेश, खेतिहर संस्कृति के बनते-बिगडते समीकरण, संपत्तियों को लेकर की जाने वाली फौजदारी, कोर्ट-कचहरियों और स्त्री के उभरते व्यक्तित्वों की तेजस्विता, चुनावों, पंचायतों में गाँव की बदलती तस्वीर और अपराधी जन-जातियों के मुख्य धारा में शामिल होने की जद्दोजहद पर केंद्रित है समकालीन लेखिकाओं में ग्रामीण परिवेश को लेकर इतनी सी रचनाएं मैत्रेयी पुष्पा के अलावा किसी ने नहीं दी । प्रस्तुत शोध प्रबंध में लोक तत्व के स्वरूप, परि भाषा एवं वर्गों पर विचार किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में समाज, रजानीति और आर्थिक व्यवस्था का विवेचन किया गया है। बुंदेलखंड के आस-पास की लोक संस्कृति के आलोक में मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में लोक संस्कृति को लिया गया है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में अभिव्यक्त ग्रामीण, आदिवासी स्त्रियों के जीवन संघर्ष और राजनीति तथा शक्ति संरचना में उनके हस्तक्षेप का विवेचन किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में भाषा के लोक प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है।

विषय सूची

1. लोक की अवधारणा एवं स्वरूप 2. मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में समाज 3. लोक संस्कृति और मैत्रेयी पुष्पा की रचनाएं 4. मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं में स्त्री समाज 5. मैत्रेयी पुष्पा की भाषिक संवेदना और लोक जीवन 6. परिशिष्ट : मैत्रेयी पुष्पा का साक्षात्कार। उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

239. संजीता

शंकर शेष के नाटकों में व्यक्ति और व्यवस्था का द्वंद्व ।

निर्देशिका : डॉ. सुधा सिंह

Th 18864

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में डॉ. शंकर शेष के अध्ययन-अध्यापन, पारिवारिक जीवन, इनके नाटक तथा नाटकोत्तर कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसमें द्वंद्व का अर्थ, स्वरूप व परिभाषा दी गई है। समाज व साहित्य का संबंध, जीवन व साहित्य, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद और समाजवाद व शंकर शेष के नाटकों में द्वंद्व का स्वरूप कहां व किस रूप में व्यंजित हुआ है यह भी दिया गया है। हिन्दी गद्य की पूर्व पीठिका व हिन्दी गद्य के विकास में विभिन्न प्रचार आन्दोलनों एवं ईसाई मिशनरियों का योगदान व ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, ईसाई मिशनरियों का योगदान, फोर्ट विलियम कॉलेज का योगदान, पत्र-पत्रिकाओं का योगदान तथा विभिन्न साहित्यिक युगों का योगदान, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, स्वातंत्र्योत्तर युग एवं विभिन्न गद्य विधाओं का योगदान तथा नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, एकांकी का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। रंग शब्द की उत्पत्ति व अर्थ, नाटक की परिभाषा व नाटक के विकास पर (भारतेन्दु युग से प्रसादोत्तर युग तक) प्रकाश डाला गया है। इसमें शंकर शेष के नाटक - मूर्तिकार, रत्नगर्भा, नई सभ्यता नये नमूने, बिन बाती के दीप, घरौंदा, रक्तबीज, पोस्टर, फंदी, कोमल गांधा, कालजयी आदि नाटकों में व्यक्ति और व्यवस्था का द्वंद्व कहां-कहां और किन-किन रूपों में प्रकट हुआ है इस पर प्रकाश डाला गया है। इसमें डॉ. शंकर शेष को स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिन्दी नाट्य-साहित्य के इतिहास में जो विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है, उसकी चर्चा करते हुए यह सिद्ध किया गया है कि हिन्दी नाटक

साहित्य के इतिहास में डॉ. शंकर शेष प्रमुख स्तम्भ हैं।

विषय सूची

1. शंकर शेष : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. द्वंद्व का अर्थ व स्वरूप 3. हिन्दी गद्य का विकास व हिन्दी नाटक का जन्म 4. हिन्दी नाटक का विकास 5. शंकर शेष के नाटकों में व्यक्ति और व्यवस्था का द्वंद्व 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची ।

240. सरोज कुमारी

निराला के गद्य-साहित्य का सामाजिक सन्दर्भ ।

निर्देशिका : डॉ. (श्रीमती) कुमुद शर्मा

Th 18876

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में हिन्दी गद्य के विकास, भारतेन्दु युगीन हिन्दी गद्य के स्वरूप, भाषा के परिष्कार की दृष्टि से द्विवेदी युगीन साहित्यकारों के भाषा एवं साहित्य संबंधी योगदान तथा छायावादीयुगीन गद्य की विलक्षणता पर विचार करते हुए सतत् मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। साहित्य समाजिक चेतना से संचरित होता है साहित्य का आधार बिन्दु समाज है । साहित्य का रूप परिस्थितियां निर्धारित करती है। समाज से पृथक साहित्य की रचना कोरी कल्पना है। साहित्य के वैचारिक आधारों दलित चेतना, स्त्री चेतना तथा उपनिवेश विरोधी चेतना के संबंध में यथायोग्य विश्लेषण किया गया है। निराला का कथा-साहित्य दलितों, स्त्रियों, पीडितो, वंचितों और किसानों की ऐसी करूण गाथा है जिसमें आर्थिक शोषण है, अत्याचार है, कुरीतियां तथा कुप्रथाओं से कराह उठने वाले समाज की सच्ची झांकी है। निराला ने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से सामन्ती मूल्यों का विरोध किया, कुरीतियों, कुप्रथाओं, आर्थिक शोषण को जड़ से उखाड फेंकने के लिए लोगों को प्रेरित किया। समाज में प्रत्येक वर्ग की समानता पर बल दिया है। इसमे इन बिन्दुओं का सम्यक विवेचन प्रमाणिक तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें निराला की विद्रोही चेतना, राष्ट्रीयता तथा उनके छायावाद से समाजवाद की ओर प्रस्थान की प्रक्रिया का विस्तृत रूप में अध्ययन किया गया है। निराला की पत्रकारिता और उनका पत्र-साहित्य में उनकी सम्पादकीय प्रतिभा को उजागर करने का प्रयास है साथ ही उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का विशिष्ट विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

निराला की आलोचकीय प्रतिभा का विशिष्ट मूल्यांकन किया गया है। 'पारिव्राजक' तथा 'रामकृष्ण वचनामृत' के आधार पर निराला के अनूदित साहित्य का मूल्यांकन किया गया हैं तथा विभिन्न आलोचनात्मक ग्रंथों में उपलब्ध सामग्री को प्रामाणिक मानकर उनके अनूदित साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार किया गया है। निराला के गद्य-साहित्य का भाषा विषयक विचारों की तात्विक समीक्षा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथा गद्य-साहित्य की विशिष्टताओं को सन्तुलित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. उन्नीसवीं शताब्दी का गद्य : भाषायी द्वंद्व 2. साहित्य के समाज शास्त्रीय अध्ययन की भूमिका 3. प्रगतिशीलता के निकर्ष पर निराला का कथा-साहित्य 4. निराला का निबन्ध-साहित्य 5. तत्कालीन परिवेश : निराला की पत्रकारिता और उनका पत्र-साहित्य 6.बीसवीं शताब्दी का आलोचनात्मक परिवेश और निराला का आलोचना-साहित्य 7. निराला का अनूदित गद्य-साहित्य 8. निराला के गद्य-साहित्य का भाषिक स्वरूप 9. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

241. सिंह (राकेश कुमार)

नवजागरण की अवधारणा और भारतेन्दुयुगीन हिन्दी गद्य-साहित्य ।

निर्देशक : प्रो. मोहन

Th 18866

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में पहले नवजागरण की अवधारणा का विश्लेषण किया गया हैं तत्पश्चात् नवजागरणकालीन प्रवृत्तियों को चिन्हित करने के साथ ही यूरोपीय नवजागरण के विविध स्वर को समझते हुए, भारतीय नवजागरण के विकासात्मक परिप्रेक्ष्य का मूल्यांकन किया गया है। भारतेन्दु युग का परिवेशगत परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत सामाजिक व धार्मिक स्थिति का मूल्यांकन करते हुए तद्युगीन भौतिक परिस्थितियों, राजनीतिक व आर्थिक संदर्भ और सांस्कृतिक व साहित्यिक परिवेशका विवेचन किया गया है। भारतेन्दु युग से पूर्व के हिंदी गद्य-साहित्य के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। भारतेन्दु युग के हिंदी गद्य-साहित्य के अंतर्गत निबंध, नाटक,

आलोचना का मूल्यांकन करते हुए, हिंदी गद्य-साहित्य के विविध रूपों की पड़ताल की गई है। सामाजिक प्रश्नों के आलोक में हिंदी गद्य-साहित्य का विवेचन किया गया है। भारतेन्दुयुगीन लेखन में नवजागरणकालीन द्वंद्व का विश्लेषण करते हुए, तद्युगीन हिंदी गद्य-साहित्य में सांस्कृतिक बोध की पड़ताली की गयी है। भारतेन्दुयुगीन वैचारिक लेखन और नवजागरणकालीन चिंतन के आलोक में भाषा का प्रश्न, धर्म की प्रकृति और राष्ट्रीयता के सवाल की पड़ताल की गयी है।

विषय सूची

1. नवजागरण की अवधारणा का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य : एक विवेचन 2. भारतेन्दु युग का परिवेशगत विश्लेषण 3. भारतेन्दुयुगीन हिंदी गद्य-साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन 4. नवजागरणकालीन चिंतन और भारतेन्दुयुगीन हिंदी गद्य-साहित्य 5. नवजागरण और भारतेन्दुयुगीन हिंदी गद्य-साहित्य में भाषा, धर्म और राष्ट्रीयता का अध्ययन 6. उपसंहार। परिशिष्ट। आधार एवं सहायक ग्रन्थ सूची।

242. हरकेश कुमार

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का सामाजिक परिवेश और रीति कवि लाल बलबीर का काव्य।

निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

Th 18859

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में उन्नीसवीं शताब्दी से अभिप्राय, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की अवधारणा एवं समय सीमा, उन्नीसवीं शताब्दी का समाज तथा समाजिक पृष्ठभूमि, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का सामाजिक परिवेश और उसकी प्रेरक स्थितियों के अन्तर्गत राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। तथा उन्नीसवीं शताब्दी की सामजिक स्थितियों के अन्तर्गत आस्था एवं विश्वास, अंधविश्वास, रीति-रिवाज एवं परम्पराएं, पर्व-उत्सव एवं त्यौहार, विलासिता एवं भोगवादी दृष्टि एवं दरबारी परिवेश के साथ-साथ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के सामजिक परिवेश का तद्युगीन साहित्य पर प्रभाव भी स्पष्ट किया गया है। कवि लाल बलबीर के जीवन-वृत एवं व्यक्तित्व का आकलन किया गया है। जिसमें इनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का परिचय देते हुए उनके विराट

व्यक्तितव के विविध आयामों को भी प्रकट किया गया है। कवि लाल बलबीर विषयक आधारभूत सामग्री और उसका परीक्षण, इनकी कृतियां एवं उनके स्रोत तथा कालक्रमानुसार एवं अज्ञात काल क्रम वाली कृतियों के नाम तथा रचनाकाल, प्रामणिकता, ग्रंथ-परिचय तथा वर्ण्य विषय पर पृथक्-पृथक् विचार किया गया है। कवि लाल बलबीर के काव्य में भक्ति और प्रेम, प्रकृति-चित्रण, संस्कृति के स्वरूप, काव्य में व्यक्त उनकी सौन्दर्य-दृष्टि तथा काव्य में व्याप्त विभिन्न लीलाओं का मूल्यांकन किया गया है। काव्य भाषा का स्वरूप, ब्रजभाषा की प्रकृति एवं विशेषताओं पर विचार किया गया है तथा इनके काव्य में व्याप्त शब्द भण्डार, अलंकार, विभिन्न काव्य गुण, शब्द-शक्तियां, मुहावरे एवं लोकोक्तियां, उक्ति-वैचित्र्य एवं संगीत तथा छंदगत चित्रण को प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और उसका सामाजिक परिवेश 2.रीति कवि लाल बलबीर का जीवन-वृत्त 3. रीति कवि लाल बलबीर का रचना-संसार 4. कवि लाल बलबीर के काव्य में प्रेम और भक्ति 5. कवि लाल बलबीर के काव्य में प्रकृति-चित्रण 6. कवि लाल बलबीर के काव्य में व्यक्त संस्कृति 7. कवि लाल बलबीर के काव्य में व्यक्त उनकी सौन्दर्य-दृष्टि 8. कवि लाल बलबीर के काव्य में व्यक्त विभिन्न लीलाएं 9. कवि लाल बलबीर की काव्य-भाषा 10. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

243. हर्षिता

पॉपुलर हिन्दी फिल्मों का फॉर्मूला, बाजार और दर्शक (1995-2007)

निर्देशक : प्रो. सुधीश पचौरी

Th 18852

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में पॉपुलर हिन्दी फिल्मों के फॉर्मूलों, बाजार और दर्शक पर चर्चा की गई है। और पॉपुलर सिनेमा और कला सिनेमा के बीच के अंतर को उदाहरणों के माध्यम से दर्शाया गया है। इसमें पॉपुलर सिनेमा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए पॉपुलर कल्चर और सिनेमा के संबंध को दर्शाया गया है । हिन्दी सिनेमा का संक्षिप्त परिचय देते हुए पॉपुलर सिनेमा और हिन्दी प्रदेश की संस्कृति के आपसी संबंध पर चर्चा की गई है। कला सिनेमा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए पॉपुलर

सिनेमा और कला सिनेमा के बीच अन्तर को दिखाया गया है। पॉपुलर सिनेमा के फॉर्मूलों पर विचार करते हुए फिल्मों के फॉर्मूले की आवश्यकता, फॉर्मूलाबद्ध फिल्मों की शक्ति ओर सीमाओं का विश्लेषण किया गया है। सिनेमा के बाजार पर ग्लोबलाइजेशन के प्रभाव को दिखाते हुए सिनेमा पर बाजार के दबाव एवं बाजार के निर्माण में सिनेमा की भूमिका पर विचार किया गया है। फ्रंट सीट ऑडियन्स, मध्यवर्गीय, मल्टीप्लैक्स का दर्शक और अप्रवासी भारतीय दर्शक की पसंद ना पसंद का विश्लेषण किया गया है। फिल्म की पटकथा, भाषा, संवाद, कैमरा और लोकेशन पर चर्चा की गई है। 1995 से 2007 तक की प्रत्येक वर्ष की एक-एक हिट फिल्म का विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. बॉलीवुड और पॉपुलर सिनेमा 2. पॉपुलर सिनेमा बनाम कला सिनेमा 3. पॉपुलर हिन्दी सिनेमा में फॉर्मूला 4. सिनेमा बाजार 5. पॉपुलर सिनेमा और दर्शक 6. फॉर्मूलाबद्ध सिनेमा : संवेदना और शिल्प 7. कुछ फॉर्मूलाबद्ध फिल्मों का विश्लेषण 8. उपसंहार। संदर्भ ग्रन्थ सूची।

M.Phil Dissertations

244. अजीत कुमार
बिहारी के काव्य में प्रेम की व्यंजना ।
निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

245. आनन्द (अलका)
जायसी कृत पदमावत में प्रेम का स्वरूप ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

246. निवेदिता
निम्नवर्गीय-विमर्श की दृष्टि से कबीर की कविता का अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. आशुतोष

247. निषाद (कु. जानकी)
21वीं सदी के पहले दशक की दस कहानियों में पारिवारिक सम्बन्ध।
निर्देशक : डॉ. संजय कुमार

248. प्रत्यय अमृत
कला की सामाजिकता की अवधारणा तथा नामवर सिंह की आलोचना-दृष्टि।
निर्देशक : प्रो. अपूर्वानंद

249. पाण्डेय (विजयलक्ष्मी)
आरक्षण फिल्म में चित्रित आरक्षण एवं शिक्षा व्यवस्था ।
निर्देशक : डॉ. निरंजन कुमार

250. पिंकी कुमारी
कवि ठाकुर के काव्य में लोकोक्ति और मुहावरा सौंदर्य।
निर्देशक : डॉ. रामनारायण पटेल

251. मीणा (बलराम)
विशाल भारद्वाज द्वारा शेक्सपियर के नाटकों का सिने-रूपांतरण।
निर्देशक : प्रो. अपूर्वानंद

252. मीनाक्षी
जेंडर की दृष्टि से मीरा की कविता का अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. श्रीमती प्रेम सिंह

253. यादव (चन्द्रशेखर)
पिंजरे की मैना में जेन्डर चेतना।
निर्देशक : डॉ. कुमुद शर्मा

254. रवि प्रकाश
असग़र वजाहत के उपन्यास और विस्थापन।
निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

255. रेखा कुमारी
दलित आत्मकथा मुर्दहिया और शिक्षा व्यवस्था।
निर्देशिका : प्रो. (श्रीमती) प्रेम सिंह

256. रौबी
डॉ. शिवप्रसाद सिंह के कहानी संग्रह 'मुरदा सराय' में ग्रामीण जीवन की विसंगतियाँ।
निर्देशिका : श्रीमती स्नेहलता

257. वर्मा (विकास)
खजुराहो का शिल्पी (शंकर शेष) की रंगभाषा ।
निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

258. शर्मा (निधि)
भट्ट निबंधावली के निबंधों का भाषिक विश्लेषण।
निर्देशिका : डॉ. मंजु मुकुल

259. सिंह (अभय कुमार)
रामचरितमानस में गृहस्थ जीवन के आदर्श ।
निर्देशक : डॉ. राजेन्द्र गौतम

260. सिंह (रमिता)
हिन्दी नाटक में कबीर के व्यक्तित्व का आकलन : इकतारे की आँख और कबिरा खड़ा बज़ार में के संदर्भ में।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

261. सिंह (सत्य प्रकाश)
विद्यापति पदावली में वर्णित प्रेम का स्वरूप।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

262. सुनीत कुमार
रांगेय राघव कृत आग की प्यास की कथा-संरचना।
निर्देशक : प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन

263. सुमनलता
सामाजिक चेतना की दृष्टि से तुलसी कृत कवितावली का अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन